International Journal of Educational Research and Studies
www.journalofeducation.net
Online ISSN: 2664-6811, Print ISSN: 2664-6803
Received: 25-10-2022, Accepted: 12-11-2022, Published: 26-11-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 51-52

वैश्वीकरण के युग में हिंदी

कल्याणी
शोधार्थी, नेट, जे.आर.एफ, बाबा मस्तनाथ युनिवर्सिटी, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रुपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसे प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ काग्र करते है। आज का युग वैज्ञानिक युग है इसमें ऐसी भाषा की आवश्यकता है जो जन–2 की भाषा होने के साथ–साथ एक विशेष प्रयोगन के लिए प्रयुक्त होती हो, ऐसी ही भाषा है हिन्दी। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है। इस शोध आलेख में आधुनिक वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा की दशा, दिशा एक उसकी वैश्वीकरण स्थिति का वर्णन किया गया है।

मूल शब्दः वैश्वीकरण, हिंदी भाषा

प्रस्तावना
वैश्वीकरण शब्द का तात्पर्य है – स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपोतरण की प्रक्रिया है। आज के युग में कोई भी खबर हो वह पूरे विश्व में फैल जाती है और यह वैश्वीकरण का फल है। वैश्वीकरण के कारण हमारी हिन्दी पूरे विश्व में फैल रही है। हमारा हिंदी का साहित्य आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल से विकास करता हुआ अब आधुनिक काल में विश्व का साहित्य बन गया। भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी हिंदी भाषा को सुनने वाले लोग बहुत मिलेगें।
हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ राष्ट्रभाषा भी है। हिन्दी भाषा ने अपना विकास स्वयं किया है। भारत के सभी राज्यों में हिन्दी बोली जाती है। भारत ही नही विश्व के कुछ देशी हिन्दी भाषा बोली, समझी और सीखी जाती है। आज विश्व में अंग्रेजी को अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप में दर्शाया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की छह आधिकारिक भाषाएँ है।

1. चीनी
2. स्पेनिश
3. अंग्रजी
4. अरबी
5. रूसी और
6. फ्रेंच

विश्व में चीनी भाषा बोलने वाले 80 करोड़ लोग है स्पेनिश 40 करोड़, अरबी 20 करोड़, रुसी 17 करोड़, फ्रेंच 9 करोड़ लोगो की भाषा है।
एक भारतीय शोधक डॉ0 जयंतीप्रसाद नौटियालने अपनी वर्ष 2015 में प्रकाशित शोध रिपोर्ट में कई नए खुलासे किए है। उनके अनुसार हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। यह विश्व की लोकप्रिय भाषा है। अब तक चीन की मंदारिन को विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में दिखाया जाता था। पूरे विश्व में मंदिारिन जानने वाले लोगों की संख्या 1100 मिलियन है जबकि हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या 1300 मिलियन है।
हिंदी पिछले कुछ वर्षो से लोकप्रियता के शिखर को छूती हुई दिखाई दे रही है। अमेरिका में भारतीय मूल के लोग रह रहे है वहाँ के हार्वर्ड, पेन, मिशीग्न, येत आदि विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण हो रहा है। वहाँ हिंदी का अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्य पन्द्रह सौ से अधिक है। अमेरिका में हिंदी के लिए कई संस्थाएँ कार्य कर रही है। जिनमें अन्तराष्ट्रीय हिंदी समिति, विश्व हिन्दी सोनसि, हिन्दी न्यास आदि प्रमुख है।
इग्लैंड के केम्बिज ऑक्सफोर्ड लंदन विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई काफी समय से होती आ रही है इग्लैंड, वेल्स और स्काटलैड में 2004–05 के स्कूल सर्वे में बच्चें की भारी संख्या में अपने आप को हिंदी भाषा बताया था। मारिशस में हिंदी को सर्वाधिक गरिमा प्राप्त है। मारिशस में प्राथमिक पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी पढ़ाई ाती है। रेडियो और टेलीविजन पर दिन–रात हिंदी में कार्यक्रम चलते रहते हैं।
वैश्वीकरण के इस दौर में कम्प्यूटर, टेलीविजन, हिंदी सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो के विभिन्न चैनलों ने हिन्दी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। टेलीविजन और फिल्मों की हिंदी में अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ दिखाई देती है। हिन्दी दिन–प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ रही है। हिन्दी आज मनोरंजन के क्षेत्र में पहले स्थान पर है। हिंदी का ही प्रभाव है कि डिस्कवरी जी टीवी, सोनी, स्टार प्लस जैसे चैनल और उनके कार्टून कार्यक्रम भारत और उसके पड़ौसी देशों में हिंदी में प्रसारित होने लगे है।

आज बाजारीकरण में विज्ञापनों की भूमिका अहम् है। हिन्दी भाषा के विज्ञापनों की प्रस्तुत ने विश्व में हिन्दी के महत्व को बताया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा भी है।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
जिन भाषा उन्नति बिन, मिटत न हिय की सूल।।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप हिंदी भाषा का तेजी से विकास हो रहा है। आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। हिंदी दिवस के अवसर पर हम भी राष्ट्रभाषा हिंदी हेतु आजीवन समर्पित होने का संकल्प ले और हिन्दी के विकास हेतु सदैव तत्पर रहें। इसी में सबकी उन्नति है। वैश्वीकरण के युग में हिन्दी भाषा की उन्नति के साथ–साथ हिन्दी साहित्य भी उन्नति कर रहा है। भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी हिन्दी के अनेक लेखक, कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, लेख, लघुकथा, गीत, नाटक, संस्मरण, रिपोतीज, साक्षात्कार जीवनी, आत्मकथा सभी विधाओं में लेखन कार्य चल रहा है।

संदर्भ सूची

1. वैचारिकी, सितंबर–अक्तूबर, 2014 भाग–30, अंक–5, पृ0 33
2. ज्ञान–विज्ञान बुलेटिन, मार्च 2015, वर्ष–11, अंक–3, पृ0 3
3. वैचारिकी, सिंतबर–अक्तूबर, 2014, पृ0 33
4. वही, पृ0 34
5. वही
6. वही, पृ0 35
7. वही
8. राजभाषा भारती, जुलाई–सितंबर, 2015, पृ0 15